चातुर्मास के प्रमुख सूत्र

जिन-जिन क्षेत्रों को चारित्रात्माओं के चातुर्मास का लाभ प्राप्त हो रहा है वे निम्नांकित बातों का विशेष रूप से ध्यान रखें ताकि साधुमर्यादा को सुरक्षित रखते हुए धर्म लाभ उठाया जा सके।

- साधु–साध्वियों के चातुर्मासिक प्रवेश, तपस्या आदि के निमित्त से आमन्त्रण–निमंत्रण पत्रिकाएँ या कार्ड आदि प्रकाशित नहीं किये जायें।
- स्थानक में साधु–साध्वियों के निमित्त से किसी भी प्रकार निर्माणादि कार्य नहीं होना चाहिए।
- चातुर्मासादि के निमित्त से स्थानक में रंगाई–पुताई का कार्य नहीं किया जाये।
- साधु–साध्वियों के पधारने के निमित्त से धर्मस्थान में पानी का पौंछा नहीं लगाना, पानी से धोना भी नहीं।
- स्थानक भवन में पानी के घड़े नहीं रखने चाहिए। नलादि भी खुलें नहीं रहे।
- स्थानक में लाईट, पंखा आदि नहीं चलने चाहिए। सैल की घड़ी भी धर्मस्थान में वर्जित है। चालू हालत में सैल की घड़ी, मोबाईल फोन आदि अपने साथ धर्मस्थान में जाना भी नहीं चाहिए।
- धर्मस्थान में इधर–उधर की व्यर्थ की बातें करके साधना के अमूल्य क्षणों का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए।
- साधु–साध्वियों से आरम्भ समारम्भ की क्रिया से जुड़ा कोई परामर्श न मांगे।
- साधुओं के स्थान पर बहनों को, साध्वियों के स्थान पर भाईयों को असयम में नहीं बैठना चाहिए। दर्शन कर मंगलपाठ करने की बात अलग है। जहाँ तक बन सके दर्शन व मंगलपाठ भी सामूहिक कार्यक्रम में लेने का लक्ष्य रखें। रात्रि में साधुओं से बहनों का व साध्वियों से पुरुष वर्ग का वार्तालाप किया जाना निषेध है।
- साधु–साध्वियों की उपस्थिति में तपस्वी, मुमुक्षुओं, शीलव्रत धारण करनेवालों का संघ लेकर उपस्थित होने वालों आदि गृहस्थों का शॉल ओढ़ाकर, माल्यार्पण आदि से अभिनन्दन आदि कार्य नहीं होने चाहिए।
- साधु–साध्वियों के प्रवेश आदि प्रसंगों पर अज्ञात अवस्था में भी उनकी फोटो आदि नहीं उतारी जाए।
- चारित्रात्माओं की उपस्थिति में पुस्तक, ग्रन्थ आदि का लोकार्पण वर्जित है।
- साधु–साध्वियों के निमित्त से ओघा, पातरा, आसन, पूंजणी, पुस्तकें, वस्त्रादि खरीदकर नहीं रखे जाए।
- गोचरी के लिए धर्मस्थान में भावना नहीं भानी चाहिए।
- चारित्रात्माओं के अपने घर भिक्षादि के निमित्त से पधारने पर घर में आवाज या ईशारा नहीं करें, बच्चों आदि के माध्यम से भी सूचना नहीं भेजें, बल्कि चारित्रात्माओं के दृष्टिगत होने पर उनके सन्मुख जाकर वन्दनपूर्वक विनय से आहार आदि के लिए निवेदन करे।
- यदि सैल की घड़ी या अन्य सचित्त पदार्थ संस्पर्श हो रहा हो तो वैसी स्थिति में मोहल्ले में पधारी हुई चारित्रात्माओं को अपने घर पधारने की भावना भी नहीं भाएँ और नही अपने घर में भिक्षादानार्थ आगे ही बढ़ें। घर के अन्य सदस्यों को आवाज या ईशारे सो अपने मनोगत भावों को भी नहीं दर्शाना चाहिए। ''अमुक पदार्थ वहाँ है उसे बहरा दो'' आदि भाव भी व्यक्त नहीं करने चाहिए। ऐसे असूझते सदस्यों का मौन रहना ही उपयुक्त है।

- चारित्रात्माओं के पधारने का समय है इसलिए उनको बहराने की भावना से फ्रिज आदि से पदार्थ बाहर नहीं निकाले जाये। गैस, ''चूल्हे आदि पर से भी नीचे नहीं उतारे जायें। संतों को भिक्षा देने के निमित्त से सैल की घड़ी आदि का बन्द करना या अलग करना भी उपयुक्त नहीं है।
- धर्मस्थान के भीतर प्रभावना वितरण कार्य न हो।
- चारित्रात्माओं की धर्मसभा में श्रवण यन्त्र का उपयोग भी निषध है।
- सामायिक, संवर, दया, पौषध आदि धार्मिक अनुष्ठानों में सैल की घड़ी का उपयोग वर्जित है।
- संतों के स्थान पर मात्र बहनों का व महासतियों के स्थान पर मात्र पुरुषों का बैठना नहीं कल्पता है। साथ ही बिना समझदार भाई की साक्षी से संतों के स्थान पर बहनों को बात करना तथा बिना समझदान बहिन की साक्षी से साध्वियों से भाईयों को बात करना भी नहीं कल्पता है।
- चारित्रात्माओं के साथ यदि विरक्त जन हो तो उसके अध्ययन आदि के लिए भी संघ अपना दायित्व निर्वाह करें।
- बालक, युवा आदि में धार्मिक संस्कारों हेतु प्रतियोगिता आदि के कार्यक्रम रखे जाये तो उनकी योजना व क्रियान्विति संघ के सक्रिय कार्यकर्ताओं को स्व विवेक से निर्धारण करना चाहिए। चारित्रात्माओं से यह दिशाबोध प्राप्त किया जा सकता है कि– अमुख प्रवृत्ति, अमुक प्रश्नोत्तर आदि सिद्धान्त विपरीत तो नहीं है।
- धार्मिक अनुष्ठान दोष रहित सम्पन्न होने चाहिए। यह श्रावकों द्वारा मुख वस्त्रिका, रजोहरण (डाडिया) आदि धार्मिक उपकरणों का विवेक रखने से संभव हो सकता है।
- **इसके अतिरिक्त स्व. आचार्य पूज्य श्री 1008 नानालाल जी म.सा. द्वारा सन् 1987 में इन्दौर में जो सूचनाएँ दी गई वे भी ध्यातव्य है। वे सूचनाएँ निम्न हैं–**

(अ)सन्त–सतियाँजी की तपस्या के उपलक्ष्य में तपोत्सव पत्रिका, आमंत्रण/निमंत्रण पत्रिका आदि प्रकाशित नहीं करवाना।

(ब) सन्त–सतियाँजी के दर्शनार्थ पहुँचने के लिए आमंत्रण–निमंत्रण पत्रिकाएँ आदि प्रकाशित नहीं करवाना।

(स) सन्त–सतियाँजी के चातुर्मास के उपलक्ष्य में पुस्तकादि का प्रकाशन नहीं करवाना।

(द) आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मुनिराज/महासतीजी के सुशिष्य/सुशिष्या आदि ठाणा हमारे यहाँ विराजना है, ऐसा आलेख नहीं होता। आलेख में इस प्रकार किया जा सकता है, यथा– आचार्य श्री रामलालजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती सुशिष्ट/सुशिष्या आदि ठाणा हमारे यहाँ विराजमान है।

(य)सन्त–सतियाँजी द्वारा प्रत्यक्ष/परोक्ष संकेत मिलने या न मिलने पर भी उपाश्रय आदि में ऋद्धि सम्पन्न (आचार्य आदि पदवी प्राप्त) महापुरुषों के अतिरिक्त सन्त–सतियाँजी का नाम, जय आदि प्रिन्ट नहीं करवाना। चातुर्मास काल आदि पर्यन्त अस्थाई बैनर लगाना पड़े तो बात अलग है।

(र) सन्त–सतियाँजी की जन्म/दीक्षा जयंती आदि नहीं मनाना। क्योंकि साधक के सदा जयंती है।